Dainik Jagaran
Pg. No. 4.
11-2-19.

बच्चों ने जानी माइग्रेशन की पीड़ा

जागरण संवाददाता, विकासनगर: देहरादून के प्रसिद्ध दून स्कूल के बच्चों ने रविवार को आसन कंजर्वेशन रिजर्व में बर्ड वॉचिंग करने के साथ प्रवासी परिंदों की गतिविधियां देखीं। उन्होंने कुंजा गांव की वन गुर्जर बस्ती में जाकर वहां के परिवेश का भी अवलोकन किया। साथ ही माइग्रेटरी बर्ड और वन गुर्जरों के प्रवास के बीच के अंतर को समझने की भी कोशिश की।

दून स्कूल के छात्रों का दल सुबह कंजर्वेशन रिजर्व आसन वेटलैंड पहुंचा। यहां बच्चों ने अपना मूल स्थान छोड़कर उत्तराखंड के मेहमान बने विदेशी परिंदों का दीदार किया। साथ ही इनकी प्रजाति, संख्या और स्वभाव के बारे में जानकारी हासिल की। पक्षी विशेषज्ञ अजय शर्मा ने

भ्रमण

- **दून स्कूल के बच्चों ने किया कंजर्वेशन रिजर्व आसन वेटलैंड का भ्रमण**
- **वेटलैंड में की बर्ड वॉचिंग, परिंदों की प्रजाति के बारे में की जानकारी हासिल**

बच्चों को परिंदों के व्यवहार और उनके अपने वतन से प्रवास पर आने की मजबूरी समझाई। कहा कि दुनिया के तमाम ऐसे देश हैं, जहां सितंबर में बर्फबारी से जीवन थम-सा जाता है। ऐसे में भोजन आदि की कमी के चलते इन मुल्कों के परिंदे उन इलाकों का रूख कर लेते हैं, जहां उन्हें उनके अनुकूल जलवायु और भरपेट खाना मिल सके। बच्चों ने बर्ड वॉचिंग के साथ-साथ परिंदों की पहचान करने संबंधी जानकारी भी हासिल की। ग्राम कुंजा स्थित वन गुर्जर बस्ती का दौरा कर बच्चों ने वन गुर्जरों के हर साल एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने की विवशता को भी समझा। दून स्कूल के विदुकेश विमल व अरविंदनाभ शुक्ला ने बताया कि देखा जाए तो परिंदों लेकर वन गुर्जरों तक, दोनों का प्रवसन समानांतर दिखता है। इन्सान और परिंदे, दोनों को ही जीवन चलाने के लिए भोजन की आवश्यकता होती है। इन दोनों के प्रवास में समानता यह है कि जब बेहद सर्द मौसम में उनके मूल स्थानों पर पेट भरने के लिए संघर्ष की स्थिति पैदा हो जाती है तो दोनों ही अपने घरों को छोड़ दूसरे स्थानों के लिए प्रवास कर जाते हैं।